प्रश्नः

''''नई वाचा' की भविष्यवाणी का ज़्या महत्व है?''

उज़रः

पुराने नियम की भविष्यवाणियों जिनमें मसीह की कलीसिया का पूर्वानुमान था, पर विचार करते समय जिस विशेष बात पर ध्यान देना आवश्यक है वह है ''एक नई वाचा'' की भविष्यवाणी। मूसा की पुरानी वाचा और मसीह की नई वाचा में बहुत सी भिन्नताएं हैं। दोनों वाचाएं परमेश्वर ने ही दी हैं और नई वाचा पुरानी में से ही विकसित हुई है।

सीनै पर्वत पर मूसा की वाचा के आरज़्भ होने के लगभग 900 साल बाद (लगभग 446 ई.पू.), लेकिन क्रूस पर इसे कीलों से जड़ने (कुलुस्सियों 2:14) के छह सौ साल पहले (लगभग 597 ई.पू.), परमेश्वर ने अपने लोगों से नई वाचा की प्रतिज्ञा की। उसने अनातोत के एक याजक यिर्मयाह को लोगों में भविष्यवाणी का यह क्रांतिकारी संदेश देने की आज्ञा दी:

> ... सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों में नई वाचा बान्धूंगा। और वह उस वाचा के समान न होगी जो मैंने उसके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, ज़्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली। परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, ... और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, ज़्योंकि, ... छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; ज़्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा (यिर्मयाह 31:31-34)।

इस नई व्यवस्था[1] या नई वाचा के नयेपन की चार विशेषताएं होनी थीं: (1) यह हृदय पर लिखी जानी थी (आयत 33ख), (2) इससे परमेश्वर और उसके लोगों का निजी सम्बन्ध बनना था (आयत 33ग), (3) यह वाचा केवल उन लोगों के साथ होनी थी जिन्होंने प्रभु को जान लेना था (आयत 34क), और (4) इससे पापों की पूर्ण क्षमा का प्रचार होना था (आयत 34ख)।

हृदय पर लिखी जाने वाली वाचा

पुरानी वाचा एक पुस्तक में अर्थात मिसरी कागज की पत्रियों (पेपरस) और पत्थर की दो पट्टियों पर लिखी गई थी (निर्गमन 24:4-7, 12; 34:28)। उसके विपरीत, नई वाचा लोगों के हृदयों पर लिखी जानी थी। पुरानी वाचा बाहर लिखी गई थी, परन्तु नई अन्दर लिखी जानी थी। पहली वाचा बाहरी थी परन्तु दूसरी ''भीतर'' लिखी जाने वाली थी। पहली वाचा शारीरिक थी, जबकि दूसरी आत्मिक। पहली वाचा दृश्य थी जबकि दूसरी अदृश्य होनी थी।

हृदय पर लिखा जाना किसी स्कूटर चलाने वाले व्यक्ति का उदाहरण देकर समझाया जा सकता है जो स्कूल के पास से गुज़रते हुए साठ किलोमीटर प्रति घंटा की गति से स्कूटर चला रहा था। अचानक, वहां खड़ी दो कारों के बीच से एक छोटा लड़का भागकर सड़क पर आ गया। ज़ोर से ब्रेक मारने के कारण उसका स्कूटर घूम गया। उसके रुकते-रुकते एक कार उस बच्चे को लग गई! स्कूटर चलाने वाले के पसीने छूटने लगे। उसकी गलती के कारण उस बच्चे की मौत हो सकती थी! इस घटना के बाद उसे सड़क के किनारे एक ओर लिखे हुए साइन बोर्ड की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी कि ''आगे स्कूल है- गति सीमा 20 कि.मी. प्रति घंटा।'' उस दिन के बाद, धीरे चलाने और उस क्षेत्र से ध्यान से निकलने की बात उसके हृदय में लिखी गई थी।

''नया नियम'' नई वाचा नहीं है

''धर्म पुस्तक का नया नियम अर्थात प्रभु यीशु का सुसमाचार'' शीर्षक से छपी सज़ाईस पुस्तकों को नई वाचा के रूप में देखने वाला गलत है। वे सज़ाईस पुस्तकें बहुत महत्वपूर्ण हैं परन्तु वे नई व्यवस्था या वाचा नहीं हैं। उनके बिना नई वाचा के बारे में नहीं जाना जा सकता था, पर वे अपने आप में नई वाचा नहीं हैं। नये नियम के आरम्भ के समय, यीशु के पुनरुत्थान के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन, उस पुस्तक पर या लोगों पर (इब्रानियों 9:19, 20) वैसे ही लहू नहीं छिड़का गया था जैसे पुरानी वाचा के आरम्भ के समय छिड़का गया था।

पेंटिकॉस्ट वाला नया नियम

सीनै पर्वत पर लिखने के लिए पवित्र जगह की तुलना में, पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में सिय्योन पर्वत पर पवित्र मनों पर लिखा गया था। पतरस के मुख से निकले आत्मा की प्रेरणा से दिए गए ये शब्द (2:4, 14, 22), लोगों द्वारा सुनने के बाद प्रसन्नता से ग्रहण किए

गए थे (प्रेरितों 2:37, 41)। उस दिन तीन हज़ार लोगों के हृदयों पर कुछ लिखा गया था। वहां लिखा गया था कि यीशु उनका प्रभु है और वे उसकी सेवा की प्रतिज्ञा करें। नई वाचा में आकर बपतिस्मा लेने के समय उनके शरीरों पर किसी पशु का लहू नहीं छिड़का गया था बल्कि उनके हृदयों पर यीशु का आत्मिक लहू छिड़का गया था (इब्रानियों 10:22; 12:24; 1 पतरस 1:2)। उन तीन हज़ार लोगों ने दिखाई देने वाले किसी लिखित शब्द को नहीं, बल्कि उस वचन को ग्रहण किया जिसका प्रचार पतरस ने किया था। उन्होंने इस संदेश को अपने हृदयों में रख लिया था। इन सब्ज़ाईस में से पहली पुस्तक के लिखे जाने से कम से कम पन्द्रह या अधिक साल पहले और छयासठ साल तक जब सब्ज़ाईस में से अन्तिम पुस्तक लिखी जानी थी (प्रकाशितवाक्य, लगभग 96 ईस्वी) तो भी, उन तीन हज़ार लोगों ने अपने हृदयों में लिखे जाने को महसूस किया था।

वास्तव में उस दिन तीन हज़ार वाचाएं बांधी गई थीं। पतरस की ताड़ना को मानने वाले उन सब में से हर कोई यीशु के साथ एक समझौते, संधि या वाचा को अंजाम दे रहा था। हर कोई इस बात की परवाह किए बिना कि कितने लोग उसके साथ होते हैं या कितने कम लोगों ने यीशु को प्रभु मानकर मसीह के पीछे चलने की अपनी वचनबद्धता दिखाई। कोई भी किसी की देखा-देखी नहीं बल्कि हर कोई इसलिए उसकी बात को मान रहा था क्योंकि उसे यीशु ने उसके हृदय में लिख दिया था। इस दृष्टिकोण से उस दिन वहां तीन हज़ार लोगों के कारण तीन हज़ार, निजी वाचाएं या अनुबंध हुए थे। हर कोई दूसरों से अलग और स्वतन्त्र था, परन्तु वे तीन हज़ार वाचाएं वही एक वाचा थी।

स्याही से नहीं

पवित्र आत्मा ने सब्ज़ाईस किताबों के आरम्भ में ''धर्म पुस्तक का नया नियम अर्थात प्रभु यीशु का सुसमाचार'' नहीं लिखा। ऐसा किसी मुद्रक ने अपनी मर्ज़ी से किया। उसे यह समझ नहीं थी कि इन दो वाचाओं के बीच मुख्य अन्तर वह जगह होनी थी जहां ये दोनों वाचाएं लिखी गई थीं। वह अज्ञानता में ही उस ईश्वरीय विचार के महत्व को कम कर रहा था कि पहली वाचा एक पुस्तक में लिखी गई थी जबकि दूसरी वाचा मनों पर लिखी गई थी। मुद्रक के शब्दों से लोग पुरानी वाचा की उन्तालीस पुस्तकों की प्रतिलिपि और नये नियम की सब्ज़ाईस पुस्तकों के बराबर देखने के भ्रम में पड़ जाते हैं।

मुद्रक के शब्द 2 कुरिन्थियों 3:3 के विपरीत हैं: ''... जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पट्टियों पर नहीं, परन्तु हृदय की मांस रूपी पट्टियों पर लिखी है।'' सब्ज़ाईस पुस्तकों की जिल्दबंद पुस्तक स्याही से लिखी गई है। बेशक यह संसार की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है, और इसके बिना उद्धार असम्भव है (यूहन्ना 6:63), पर यह नया नियम नहीं है। नया नियम स्याही से लिखा हुआ नहीं बल्कि आत्मा से लिखा गया है। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा ने पतरस के शब्दों से मांस रूपी पट्टियों अर्थात हृदयों पर लिखा था। आज आत्मा पतरस की लिखित बातों के द्वारा वही काम करता है (जिसका वर्णन प्रेरितों 2 में लूका ने किया है)।

पवित्र आत्मा ने कागज पर स्याही से सज़ाईस किताबें लिखवाई हैं, पर वे नई वाचा नहीं हैं। उन सज़ाईस पुस्तकों का संदेश पढ़ने, उसे मानने और उसकी बात पर अमल करने से ही नई वाचा प्रभावी होती है। जब उन सज़ाईस पुस्तकों के संदेश को पढ़कर, स्वीकार किया जाता और फिर उन पर चला जाता है तभी कहा जा सकता है कि पवित्र आत्मा ने हृदय की मांस रूपी पट्टियों पर नई वाचा लिख दी है।

एक चर्चित विवाह में, दर्शक यह देखकर भावुक हो गए कि दुल्हन के हाथ में एक सुन्दर, सफेद, चमड़े की जिल्द वाली बाइबल है। बाद में फोटोग्राफर ने उस सफेद बाइबल पर दुल्हन और दूल्हे के हाथ रखवाकर एक फोटो ले ली। साफ है कि उस दज़्पज़ि के कहने का अभिप्राय था कि ''बाइबल हमारे घर का आधार होगी।'' बेशक घर बनाने के लिए सफेद चमड़े में स्याही से लिखी किताब रखने से अधिक की आवश्यकता है। जो कुछ उस पुस्तक में लिखा था वह उनके हृदयों में नहीं लिखा गया था। वे हनीमून पर जाते समय बाइबल को अपने साथ ले गए, पर उन्होंने उसे पढ़ा नहीं। उनके घर में उस सफेद बाइबल को उनके लिविंग रूम में बड़ी श्रद्धा से रखा गया था, पर खोला नहीं गया। उस परिवार में कभी प्रार्थना नहीं हुई, कभी पवित्र शास्त्र इकट्ठे बैठकर पढ़ा नहीं गया। कुछ महीनों के बाद वह युवक किसी दूसरी स्त्री पर मोहित हो गया और उसकी पत्नी ने तलाक के लिए उस पर मुकदमा कर दिया। आज भी वह सफेद बाइबल उसके घर में रखी हुई है, पर वह उसे आनन्द देने के बजाय आंसू ही देती है। जब तक बाइबल की बातें हृदय पर नहीं लिखी जातीं तब तक यह शज़्तिरहित ही है। परमेश्वर का लिखित वचन जीवित है और केवल भले और ईमानदार हृदयों में ही काम करता है (इब्रानियों 4:12; लूका 8:15)।

एक निजी सज़्बन्ध

पुरानी और नई वाचाओं में पहला अन्तर उनके लिखे जाने के स्थान का होना था। दूसरा अन्तर उस सज़्बन्ध में होना था जो परमेश्वर और उसकी वाचा के लोगों में होना था: ''मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे'' (यिर्मयाह 31:33ग)। सृष्टि के आरज़्भ से ही, स्वर्गीय पिता अपने और अपने स्वरूप पर बनाए गए के बीच एक निजी संगति चाहता था। अदन में उसने यही चाहा था, और मनुष्य के पाप से इसे असज़्भव बना देने तक उसने ऐसा ही किया था। इसके बाद, पिता के साथ इस निजी सज़्बन्ध का आनन्द केवल कुछ ही लोगों ने लिया था। हनोक इन अपवादों में से एक था। कम से कम तीन सौ साल तक (उत्पज़ि 5:22) अदन में आदम की तरह नहीं परन्तु वह परमेश्वर के साथ आत्मिक संगति में चलता था। और भी लोग थे (जैसे शमूएल, यूसुफ, दाऊद, और दानिय्येल) जो हर रोज अपने परमेश्वर के साथ संगति में रहते थे जिससे दोनों संतुष्ट थे।

आत्माओं के पिता के साथ मनुष्य की आत्मा की यह आनन्दपूर्ण संगति, पुरानी वाचा में सज़्भव तो थी पर सामान्य नहीं थी। परन्तु, पिता ने कहा कि हृदय पर लिखी गई वाचा में सब मसीही लोगों को इस बात का पता होगा कि ''मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:16ख)।

जो निकटता परमेश्वर अपने और आज्ञा मानने वाले आत्मा में चाहता है उसे यीशु की प्रार्थना में देखा जाता है: ''तू सदा मेरी सुनता है'' (यूहन्ना 11:42)। एक सचेत मसीही जानता है कि उसे परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव छूने से नहीं बल्कि उस विश्वास से होता है कि परमेश्वर हमेशा उसके पास है: ''प्रभु निकट है'' (फिलिप्पियों 4:5ख)। यह आश्वासन उसे दृढ़ता देता है जो कि अन्दर का आनन्द है और वह शांति देता है जो सारी समझ से परे है (फिलिप्पियों 4:6, 7)। आज्ञा मानने वाले मसीही लोग इस बात को समझते हैं कि परमेश्वर उनमें ऐसे रहता है कि वह दूसरे लोगों में नहीं होता (यूहन्ना 14:23)। वे इस बात को जानते हैं कि पिता उन्हें विशेष तौर पर अपने लोगों के अर्थात ''(परमेश्वर की) निज प्रजा'' (1 पतरस 2:9) के रूप में देखता है। वे जानते हैं कि यीशु उन्हें अपने भाई कहने से (इब्रानियों 2:11) और उसका पिता उनका पिता कहलाने से नहीं लजाता, ज़्योंकि उसने कहा है, ''कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:16; देखिए प्रकाशितवाज़्य 21:7)।

यीशु, जो पिता को हम में से किसी से भी अच्छी तरह जानता है, ने विश्वासी मनुष्यों को आश्वासन दिया है कि ''तुज़्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं'' (मज़ी 10:30)। कई लोग हास्यास्पद ढंग से दावा करते हैं कि कुछ लोग इतना ऊंचा दर्जा नहीं पाएंगे, परन्तु हम सब इस बात को समझते हैं कि यीशु की बात परमेश्वर और उसके लोगों के बीच पाई जाने वाली निकटता, संगति और सज़्भाल को दिखाती है।

प्रभु को जानने वाले

तीसरी भिन्नता यह है कि नई वाचा में सबको प्रभु का ज्ञान होना था।

शमूएल। पुरानी वाचा में, एक बालक जन्म से ही परमेश्वर के लोगों में गिना जाता था। उदाहरण के लिए, शमूएल के माता-पिता इब्रानी थे, जो कि दोनों ही वाचा के लोग थे। इस कारण वह स्वत: ही मूसा की वाचा के अधीन आ गया बेशक वह प्रभु को नहीं जानता था। एक छोटे बालक के रूप में उसे एली की सज़्भाल में मन्दिर में छोड़ दिए जाने पर प्रभु द्वारा उसे सिखाया जाना था। पुरानी वाचा में नवजात शिशु सदस्य होने थे, परन्तु परमेश्वर ने यह साफ कर दिया था कि नये नियम में ऐसा नहीं होना था: ''ज़्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे'' (इब्रानियों 8:11ख)।

पिन्तेकुस्त के दिन वाले लोग। तुलना करते हुए, नई वाचा के आरज़्भ की घटना पर विचार करें: ''जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 2:41), परन्तु उनमें कोई भी नवजात शिशु नहीं था। नई वाचा को मानने वाले केवल वही थे जिन्होंने यह जान लिया था कि यीशु मसीह वही है (प्रेरितों 2:36)।

फिलिप्पी दारोगा। लिखा है कि फिलिप्पी दारोगे ने अपने परिवार सहित बपतिस्मा लिया। यदि उसके घर के कुछ लोग नवजात शिशु थे, तो प्रभु द्वारा बताया गया पुरानी और नई वाचा का तीसरा अन्तर सही नहीं है, ज़्योंकि नवजात शिशुओं को यह पता नहीं होना था कि प्रभु कौन है। हम पढ़ते हैं कि दारोगे के घर के सब लोगों ने वचन को सुना (प्रेरितों

16:32) और फिर बपतिस्मे के द्वारा प्रभु में विश्वास करके नई वाचा में भागीदार बन गए।

समूहवाद नहीं। परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया कि नई वाचा प्रभु के साथ कोई राष्ट्रीय या पारिवारिक संधि नहीं है। बल्कि यह साफ तौर पर एक पापी और उसके उद्धारकर्ज़ा में निजी और व्यज़्तिगत अनुबंध है। आत्मिक समूहवाद जिसमें एक के प्रभु में आने से सब का उद्धार हो जाए मसीहियत में नहीं है।

संपूर्ण क्षमा

नये नियम में मिलने वाले नयेपन की चौथी बात पापों की पूर्ण क्षमा का ज्ञान होना था: ''ज़्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा'' (यिर्मयाह 31:34ख; इब्रानियों 8:12; 10:17 भी देखिए)।

क्रूस से पहले की एक असज़्भावना

क्रूस पर यीशु के मरने से पहले, पापों की पूर्ण क्षमा सज़्भव नहीं थी। यह सत्य है ज़्योंकि ''बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22); ''अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)। धर्मी हाबिल जैसे विश्वासी लोगों के पाप (मज़ी 23:35) क्षमा किए गए थे, ज़्योंकि परमेश्वर जानता था कि यीशु आकर अपना लहू बहाएगा। परन्तु, पूर्ण तौर पर, हाबिल के मेमने के लहू से अपराध मिटा नहीं था; यह केवल परमेश्वर के मेमने की ओर ध्यान दिला पाया था। ''जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)।

नातान ने दाऊद के हत्या और व्यभिचार के उसके पापों की क्षमा होने के बारे में उसे बताया था, जिसकी क्षमा व्यवस्था में नहीं थी (2 शमूएल 12:13)। क्षमा पूरी तरह से, यीशु की मृत्यु के बिना पूर्ण नहीं होनी थी।

यही बात यूहन्ना द्वारा उससे बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले लोगों के साथ (मरकुस 1:4) पापों की क्षमा की उसकी प्रतिज्ञा के साथ थी। बपतिस्मा लेने पर उनके पाप क्षमा किए गए थे, तो भी वास्तव में उद्धारकर्ज़ा के लहू बहाए बिना वे मिटे नहीं थे।

क्रूस के बाद एक वास्तविकता

पिन्तेकुस्त के दिन तक, प्रत्येक वर्ष बार-बार पापों को स्मरण किया जाता था (इब्रानियों 10:3)। धर्मी होने के कारण परमेश्वर भूल नहीं सकता था, परन्तु यिर्मयाह के द्वारा की गई प्रतिज्ञा यह थी कि नई वाचा के प्रभावी होने पर पापों की पूर्ण क्षमा मिल सकेगी। बपतिस्मा लेने के समय यह आश्वासन मिलता है कि अतीत को पूर्ण कर दिया गया है (इब्रानियों 10:14)। उसे उसकी प्रतिज्ञा मिलती है जो झूठ नहीं बोल सकता कि वह उसके पापों को कभी स्मरण न करेगा। न्याय के दिन, उसे बपतिस्मे से पहले की गई किसी गलती के लिए जवाब नहीं देना पड़ेगा।

मसीही व्यज़्ति बपतिस्मे के बाद जो कुछ करता है वह नई वाचा के अतिरिज़्त नियमों

से मेल खाता होना चाहिए, पर जो समय बीत चुका है वह बीत चुका है। जैसे पुल के नीचे से बह चुके पापी को वापस नहीं लाया जा सकता है वैसे ही अतीत को वापस नहीं लाया जा सकता। मसीही व्यक्ति इस बात में आनन्द कर सकता है कि बपतिस्मे से पहले चाहे उसके पाप लाल सुरख रंग के थे, परन्तु बपतिस्मे के बाद उसका हृदय ऊन की तरह सफेद और बर्फ की तरह उजला हो गया (देखिए यशायाह 1:18)। परमेश्वर उसे ऐसे मानता है जैसे उसने कभी कोई पाप किया ही न हो। दो वाचाओं में यह चौथा अन्तर, नयेपन का चौथा क्षेत्र, एक पापी आत्मा को पवित्रता, आश्वासन, आनन्द, महिमा और धन देता है।

सारांश

हर मसीही को उस नई वाचा में जो परमेश्वर ने उसके साथ बांधी है, आनन्द करना चाहिए। पुरानी वाचा का युग बीत गया है, क्योंकि उसे क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया है। परमेश्वर के साथ आशिषों और संगति का एक नया दिन यीशु की उस अन्तिम वसीयत और नियम के द्वारा मिलता है।

पाद टिप्पणी

[1]कुछ सीधे-सादे मसीही लोगों ने विकृत, कठोर चिज़, कपटपूर्ण व्यवस्थापालक होने के बुरे असर के आधुनिक उदाहरणों को देखकर (देखिए मज़ी 15:8) पौलुस द्वारा लिखे कुछ पदों का गलत मतलब निकाल लिया है (जैसे रोमियों 6:14, परन्तु रोमियों 3:27; 8:1 देखिए) कि मसीहियत में किसी प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं है। इस विचार के कारण वे "व्यवस्था के अनुसार" होने की किसी भी बात पर दोष लगाने लगते हैं। ऐसा करके, वे इस बात को समझने में नाकाम रहते हैं कि मन से परमेश्वर की व्यवस्था की आज्ञा मानने वाला व्यक्ति धर्मी हो सकता है, जो कि व्यवस्था को मानने का सबसे सही समय है (2 तीमु. 2:5)। यिर्मयाह 31:31-34 में पुरानी से नई तक आगे बढ़ाने के लिए "व्यवस्था" (*torah*) शब्द का इस्तेमाल किया गया है। यद्यपि पहली की तुलना में दूसरी वाचा में चार गुणा स्पष्ट नयापन है परन्तु नयेपन का अर्थव्यवस्था का न होना *नहीं* है। व्यवस्था को मानने की बात सही मायनों में दोनों ही व्यवस्थाओं में मिलती है (देखिए गलतियों 6:2; 1 कुरिन्थियों 9:21; याकूब 1:25; 1 यूहन्ना 3:4; इब्रानियों 8:10)।